वर्ष-3 अंक - 5 मई 2019
जे - 7 श्रीरामनगर, रायपुर (छ.ग.)

आर.एन.आई. पंजीकरण क्रमांक
CHHHIN/2017/72506

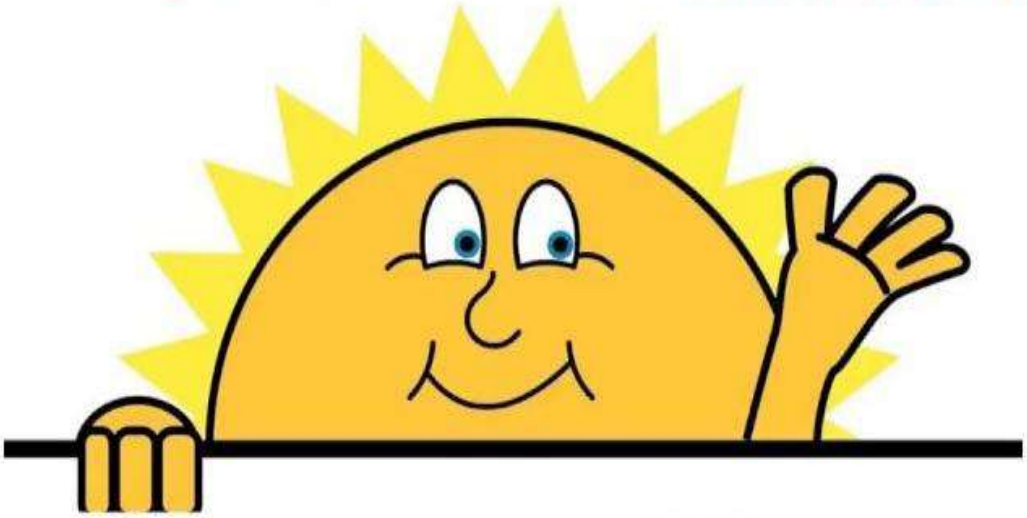

किलोल

संपादक - डा. आलोक शुक्ला
सह-संपादक - एम. सुधीश

संपादक मंडल -
राजेंद्र कुमार विश्वकर्मा, शेख अजहरुद्दीन

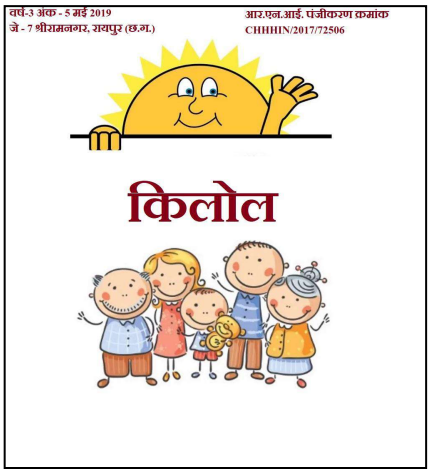

प्यारे बच्चों,

परीक्षाएं समाप्त - छुट्टी शुरू. वाह खेल कूद का समय है. मज़े करने का समय है. आप सब गर्मी की छुट्टी में घूमने जायेंगे और दोस्तों के साथ खेलेंगे.

गर्मी के मौसम में घर से बाहर खेलते समय इस बात का ख्याल रखें कि कहीं आपको लू न लग जाये. तेज़ धूप में बाहर न निकलें और खूब पानी पियें. बीमारी से बचने के लिये खान-पान का ध्यान रखना भी ज़रूरी है. तली-भुनी चीज़ें ज़्यादा न खायें और भोजन को सदा ढ़ंक कर रखें.

गर्मी की छुट्टियों में खेल-कूद के साथ आप नई बातें सीख भी सकते हैं. अपने शौक पूरे कर सकते हैं. नृत्य संगीत और कला का अभ्यास कर सकते हैं. जो भी करें जीवन का पूरा मज़ा पूरे उल्लास के साथ अवश्य लें. इसमें किलोल भी आपके साथ है. आप किलोल को अपने मोबाइल पर डाउनलोड करके मित्रों के साथ पढ़ सकते हैं. किलोल के लिये कहानी, गीत, कविताएं, पहेलियां, चुटकुले आदि का हमेशा की तरह स्वागत है. हमेशा की तरह किलोल http://alokshukla.com/Books/BookForm.aspx?Mag=Kilol पर नि:शुल्क डाउनलोड के लिये उपलब्ध है.

आलोक शुक्ला

<u>नौकरी के आस</u>

लेखक - महेन्द्र देवांगन "माटी"

राजेश अऊ मनोज दूनों पक्का दोस्त रिहिसे. दूनों कोई पहिली कक्षा से बारहवीं कक्षा तक एके साथ पढ़ीस लिखीस अऊ बड़े बाढ़हीस. दूनों झन के दोस्ती ह गांव भर में परसिध्द रिहिसे. कहुंचो भी आना जाना राहे दूनों कोई एक दूसर के बिना नइ जावय. राजेश ह गरीब राहय त कई बार मनोज ह ओकर सहायता करे. पुस्तक कापी तक ले के दे देवत राहय. बारहवीं पढ़हे के बाद राजेश ह गरीबी के कारन आगे नइ पढ़ीस अऊ अपन घर के काम बूता में हाथ बंटाय लागीस. वोहा बैंक ले करजा लेके छोटे से किराना दुकान खोल लीस. बिहना ले मन लगाके दुकान में बइठे अऊ धीरे धीरे बैंक के करजा ल तक छूट डरीस. एती मनोज ह कालेज पढ़हे बर शहर चल दीस. कभू कभू गांव में आये त राजेश अऊ मनोज अइसे मिले जइसे राम-भरत के मिलाप होथे.

पांच साल में मनोज ह एमए ल पूरा कर डरीस. माने पढ़ लिख के तैयार होगे. अब ओहा बड़े नौकरी के तलाश में लग गे. जेन भी सरकारी नौकरी के विज्ञापन निकले सबमें ओहा फारम भरे. एको ठन ल नइ छोड़त रिहिसे. फारम भरई में कतको पइसा बरबाद होगे, फेर नौकरी नइ मिलत राहय.

एक दिन जब मनोज गांव में आइस त ओकर दोस्त राजेश ह सलाह दीस के भाई तोला नौकरी जब मिलही तब मिलही, अभी कम से कम एकात ठन धंधा पानी करले. धंधा में भी बहुत फायदा हे अऊ कोनों नौकरी से कम नइहे. मोला देख आज धंधा के बदौलत मोर घर के हालत सुधरगे. मनोज ह ओकर बात ल हाँस के टाल दीस, अऊ बोलथे - 'मोला धंधा करे बर रहितिस त अतका काबर पढ़तेंव. अतेक खरचा करके पढ़हे हों त ओकर हिसाब से नौकरी भी करहूं. नहीं ते मोर का इज्जत रही.' राजेश ह ओला जादा नइ समझा सकीस. बस अतके बोलीस के ते पढ़े लिखे जादा समझदार हस, में तो जादा नइ पढ़हे हों. जतका मोर कर बुध्दि हे ततके सलाह दे हँव.

मनोज ह जी परान देके नौकरी खोजत रहय. कभू नेता मनकर त कभू मंत्री मन करा चक्कर लगात राहय. अइसने अइसने लाखों रुपिया ल बरबाद कर डारीस. घर के मन ला तक चिंता छागे के ये लइका के जिनगी कब बनही. धीरे धीरे उमर ह तक बाढ़त जावत हे, अऊ अब तो नौकरी लगे के आखिरी उमर ह बीतत हे. फेर नौकरी के आस लगाये अभी तक बेरोजगार बइठे हे.

समझदारी

लेखिका - श्वेता तिवारी

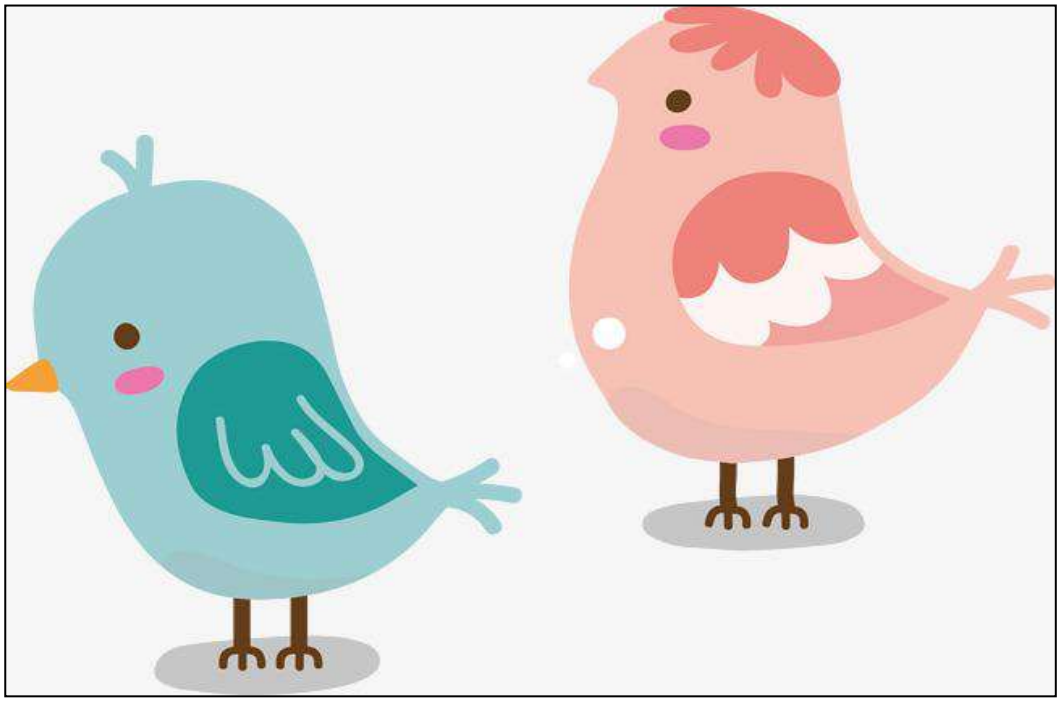

किसी जंगल में दो चिड़िया रहती थी. सुधी और शुभी. दोनों में बहुत ही प्रेम था. एक दिन की बात है जंगल में एक शिकारी आया. पिजरे में दाना डाला दाना देखकर सुधी उतावली हो गई और पिंजरे में गई दरवाजा बंद हो गया. शुभी बाहर जोर जोर से रोने लगी. शिकारी उसे घर ले गया. सुबह शिकारी उसी स्थान पर गया. शुभी जोर जोर से रो रही थी. शिकारी ने पूछा - 'तुम क्यो रो रही हो'. तब शुभी ने कहा - 'मैं अकेली हो गई हूँ. मुझे मेरी बहन की बहुत याद आ रही है.' जब शिकारी घर आया तो उसने सुधी को सारी बातें बताईं. तब सुधी ने उससे कहा - 'अगर अब शुभी मिले तो कहना उसकी बहन राजी खुशी से है.' शिकारी अगले दिन जंगल गया और शुभी से कहने लगा कि तुम्हारी बहन सुधी राजी खुशी से है. तुम कैसी हो? शुभी ने थोड़ी देर सोचा और फिर बोली - 'मैं बीमार हूँ. लगता है कि अभी प्राण निकल न जाएं.' इतना कहकर शुभी पेड़ से नीचे गिर गई. शिकारी ने उसे उठाकर देखा फिर झाड़ियों में फेक दिया. शुभी थोड़ी देर बाद उड़कर पेड़ पर

जा बैठी. शिकारी घर गया तो उसने देखा कि सुधी पिजरें में मरी पड़ी है. शिकारी यह देखकर बहुत दुखी हुआ. उसने सुधी को निकाल कर बाहर फेक दिया. थोड़ी देर बाद सुधी उड़ते-उड़ते जंगल में चली गई जहाँ उसकी बहन शुभी इंतज़ार कर रही थी. इस तरह दोनों बहने मिलकर फिर रहने लगीं.

शिक्षा - विपत्ती में हमें समझदारी से काम लेना चाहिए.

संस्मरण - जब बच्चे स्वयं ही प्रश्न बनाने लगे

लेखिका - श्रीमती मीरा वर्मा

प्राथमिक शिक्षा में मेरी प्रथम नियुक्ति 1999 में प्रा0वि0 राजाराम चौरिहा पुरवा, अतर्रा में हुई थी. मुझे बच्चों को पढ़ाना अच्छा लगता था और मैं नित नवीन तरीके खोजती रहती थी. संयोग से उस विद्यालय में साहित्यकार और नवाचारी शिक्षक प्रमोद दीक्षित 'मलय' पहले से ही कार्यरत थे. मुझे हमेशा उनसे सीखने को मिलता रहा. कुछ साल बाद मेरी प्रोन्नति पू0मा0वि0 गर्गन पुरवा में हो गई. यहाँ सामजिक विषय पढ़ाने की जिम्मेदारी दी गई. मैंने सामाजिक विषय शिक्षण का परम्परात तरीका अपनाया हुआ था जिसमें मैं प्रश्नों के उत्तर लिखा देती थी, साथ ही मानचित्र पर कुछ काम करने का प्रयास किया. बच्चे उन्हें रट लेते थे. क्योंकि

कोर्स पूरा करने का मानसिक दबाव होता था. बच्चे प्रश्न पूछने पर वही रटे हुए उत्तर उगल देते थे. यह करते हुए मैंने अनुभव किया कि बच्चों में सामाजिक विषय अन्तर्गत ऐतिहासिक तिथियों, तथ्यों, युद्धों, संधियों, भौगोलिक शब्दों एवं लोकतांत्रिक प्रक्रिया की समझ का अभाव है तथा विषयवस्तु को वे अपने शब्दों मे व्यक्त नहीं कर पा रहे हैं. मैं बच्चों के साथ कैसे काम करूँ कि वे प्रकरण को समझ जायें, यह मेरे दिमाग में चलता रहता था. संयोग से प्रमोद दीक्षित जी ने 2012 में कुछ नवाचारी शिक्षकों के साथ स्कूल बेहतरी के लिए एक समूह 'शैक्षिक संवाद मंच' का गठन किया था और मैं उस समूह में आरम्भ से ही जुड़ी हुई थी. एक बैठक में मैंने यह समस्या रखी. जो समाधान मिला उस पर संकल्प के साथ योजना बनाकर काम शुरु किया.

मैंने योजनानुसार समाधान खोजने का प्रयास किया और एक नवाचार 'सुनो, देखो, समझो और बोलो' पर काम प्रारम्भ किया. सबसे पहले मैंने बच्चों से बात की कि अब सीधे प्रश्न नहीं लिखाऊँगी बल्कि हम लोग पहले आपस में पाठ के सम्बंध में बातें करेंगे और स्वयं अपने प्रश्न बनाकर उत्तर खोजेंगे. मैंने उन्हें एक सप्ताह तक किसी पाठ के किसी हिस्से पर प्रश्न बनाना और उत्तर खोजना सिखाया. यह सीख जाने पर मैंने अपने नवाचार पर काम शुरू किया. सबसे पहले मैं सम्बंधित पाठ को बच्चों के सामने प्रस्तुत करती. उस पर बच्चे खूब प्रश्न करते और मैं उनके उत्तर देती. फिर कक्षा को तीन या चार छोटे समूहों में बाँट कर पाठ के को उतने ही भागों में बाँट कर समूहों को दे देती जिन पर उन्हें प्रश्न बनाकर उनके उत्तर खोजना होता. समूह में पहले पूरा पाठ पढ़ा जाता फिर अपने हिस्से पर काम होता. यह सारा काम वे अपनी कापियों में करते. मैं घूम-घूमकर प्रत्येक समूह का काम देखती रहती और जरूरत पड़ने पर उनका मार्गदर्शन करती रहती. काम करने के बाद हर समूह अपने काम को पूरी कक्षा के सम्मुख प्रस्तुत करता जिस पर मैं

और अन्य समूहों के बच्चे प्रश्न करते या सुझाव रखते. मैं भी बच्चों के साथ बैठ जाती हूँ. इस प्रक्रिया में कोई नाटिका, गीत, खेल आदि गतिविधि होती जो बहुत रुचिपूर्ण होती है. हर बच्चे को बोलने का अवसर दिया जाता है. इस नवाचार से बच्चों में समझ बढ़ी है और वे विषयवस्तु को अपने शब्दों में व्यक्त करने लगे हैं. उनमें आत्मविश्वास बढ़ा है और वे स्कूल के अन्य कार्यक्रमों में भी बढ़-चढ़कर हिस्सा लेते हैं और अपने विचार व्यक्त करते हैं. मेरे छुट्टी में रहने या कोई घण्टा खाली होने पर वे अपने समूह बनाकर उस घण्टा का विषय पढ़ने लगते हैं. इस नवाचार को समझने के लिए मेरे स्कूल की शिक्षिकाएं भी कई बार मेरी कक्षा में पीछे बैठी हैं और संवाद किया है.

इस नवाचार के रुचिपूर्ण होने के कारण स्कूल में बच्चो की उपस्थिति बढ़ी है और वे बच्चे भी स्कूल आने लगे हैं जो घरेलू कामों में लगे रहते थे. बच्चों को विषय को रटने से मुक्ति मिल गई है और उनमें समझ बढ़ी है. बच्चों को गीत सीखने और अभिनय करने की ललक पैदा हुई है. स्कूल का वातावरण लोकतांत्रिक हुआ है क्योंकि बच्चे प्रश्न पूछना सीख गये हैं. सहयोगी शिक्षक भी अपनी कक्षाओं में इसे अपनाने लगे हैं. मुझे बेहद खुशी है कि बच्चे अब स्वयं प्रश्न बनाना और उनके उत्तर खोजना सीख गये है. पहले किसी पाठ पर केवल आठ-दस प्रश्न ही होते थे पर अब प्रश्नों की संख्या पचास से ऊपर हो जाती है. ऐसे ही मैंने मानचित्र, मिट्टी, प्रागैतिहासिक औजार, खनिज संपदा, वन क्षेत्र, नदी-तालाब और जलवायु के प्रकरणों पर बात कर प्रोजेक्ट बनाकर काम किया है. बच्चों के साथ मैं भी सीखती रही हूं.

सम्पर्क: स.अ. पू.मा.वि. गर्गन पुरवा, क्षेत्र- नरैनी, जिला- बाँदा, उ0प्र0

संस्मरण गणित लैब - बालिका शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में

लेखिका - प्रज्ञा सिंह

मैं शा. पू. मा. शाला हनोदा, दुर्ग में गणित शिक्षिका हूँ. चूंकि मेरा कार्य क्षेत्र ग्रामीण परिवेश है, जहाँ आज भी शिक्षा के प्रति जागरूकता की कमी है, सही अध्ययन, अध्यापन के लिए शिक्षक के साथ पालकों को जागरूक होना अति आवश्यक है, परंतु इन विद्यार्थियों के साथ इस प्रकार का कोई सहयोग नहीं होता है. इनकी घरेलू परिस्थिति भी अध्ययन के अनुकूल नहीं होती, खासकर बालिकाएं केवल शालेय अवधि में ही अध्ययन कर पाती हैं, घरेलू कामकाज या छोटे भाई बहनों की देखभाल के लिए शाला से भी अनुपस्थित हो जाती हैं. इस परिस्थिति में इनकी अध्ययन की तारतम्यता भंग हो जाती है तथा ये क्षमता होते हुए भी पाठ्य वस्तु को भली भांति नहीं समझ पातीं. इनके लिए गणित, विज्ञान, अंग्रेजी का अध्ययन

बहुत कठिन होता है, खासकर गणित विषय का अध्ययन! क्यूंकि अन्य विषय तो ये समझ भी जाती हैं किन्तु गणित के कठिन अवधारणा को समझना इनके लिए एवरेस्ट फतह करने जैसा दुष्कर होता है. और भी अनेक समस्याओं ने मुझे इस विषय को सहज, सरल रूप से समझाने के प्रयास की खोज करने के लिए मजबूर कर दिया. प्रारंभ में मैंने पुस्तक से ही चित्रों, चार्ट व सूत्र के माध्यम से समझाने का प्रयास किया किंतु इस प्रयास की सफलता पर मुझे स्वयं ही संदेह हो रहा था, क्यूंकि बच्चे स्वभाव से ही चंचल होते हैं और कठिनता, बोझिलता के कारण, शाला न आने के कारण वे अध्ययन पर एकाग्र नहीं हो पा रहे थे.

अन्ततः अथक चिंतन के बाद मैंने कुछ ऐसा करने का संकल्प लिया कि कुछ नया कार्य करना है, तब मैंने गणित के लिए मॉडल और टी एल एम बनाने की दिशा में काम करने की शुरुआत की और इसके लिए मैंने कुछ बालिकाओं को अपने साथ जोड़ा, और हम सब रोज लैब बनाने की दिशा में कार्यरत हो गए. शुरुआत में तो जो बालिकाएं मेधावी थीं वही मेरे साथ आती थीं, किंतु उस दिन मैं सुखद आश्चर्य से भर उठी जब मानसिक रूप से कमजोर बच्चियाँ ज्योति, कविता और खेमिन को भी इसमें जुड़ने के लिए उत्सुक देखा. फिर क्या था 2 सालों के अथक प्रयास के बाद आज हमारा मैथ्स लैब एक वृहद् रूप में समक्ष है. जिसमें 200 से अधिक टी एल एम का समावेश है.

इस यात्रा के दौरान बहुत कठिनाइयों का सामना भी करना पड़ा. पहली समस्या कक्ष की थी. इस समस्या को सुलढाने के लिये उस कक्ष को साफ किया जिसमें पहले शाला का कबाड़ भरा हुआ था. रोशनदान को प्लास्टिक शीट से बंद कराया. पेंटिंग कराई, पंखे लगवाए. इसके लिए मुझे कोई भी शासकीय सहायता नहीं मिली थी, टी एल एम बनाने के लिए यथोचित सामग्री का वहन भी मैंने स्वयं किया. दूसरी समस्या समय की थी. क्यूँकि मुझे 4 कालखंड पढ़ाना भी था. इस समस्या से

निपटने के लिये मैंने अपने कालखंड पूर्वान्ह में लगातार रखवाये. मध्यान्ह भोजन के बाद हम ने काम करना शुरू किया. कई बार घर लेजाकर भी, छुट्टियों में भी काम करने के बाद आज मेरा मैथ्स लैब प्रदेश में पहचान बना पाया है.

इस लैब को देखने हमारे शिक्षा विभाग के सभी बड़े अधिकारी आ चुके हैं, डी पी आई (शिक्षा संचालक) श्री एस प्रकाश सर विशेष रूप से लैब का भ्रमण कर चुके हैं.

संस्मरण - एक शिक्षक की आत्मकथा

उजाले की चाह में अविराम बढ़ता रहा

प्रमोद दीक्षित 'मलय'

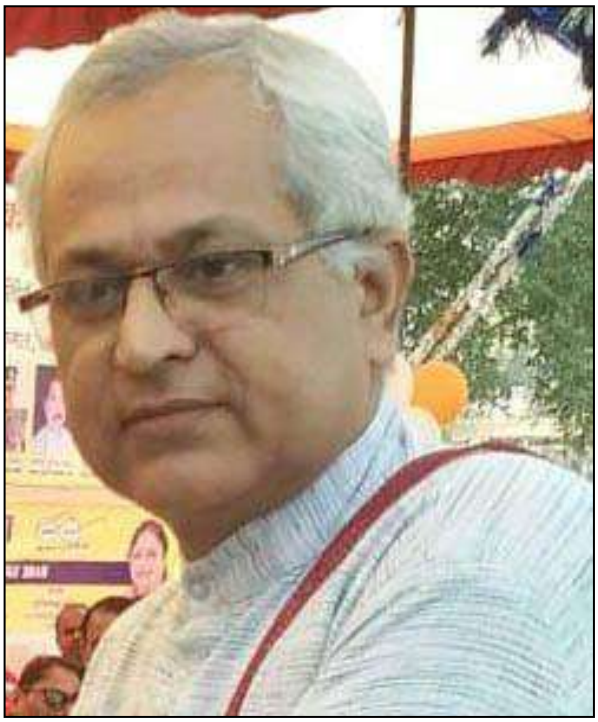

बुंदेलखंड के बांदा जिले के एक पिछडे गांव 'बल्लान' में 1973 में जन्म हुआ और 1998 में प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में सहायक अध्यापक के रूप में जुड़ना हुआ. एक शिक्षक के रूप में काम करते हुए पूरे बीस साल हो गये हैं. अपनी पढ़ाई, शिक्षक बनने की प्रक्रिया, शिक्षक रूप में अनुभव और इस दौरान मिली बाधाएं एवं चुनौतियां, समाधान के रास्ते और उपलब्धियों की ओर देखता हूं तो कुछ ऐसा चित्र उभरता है.

पढ़ने के साथ लिखना भी प्राथमिक कक्षाओं में रहते हुए ही शुरु हो गया था। हालांकि तब यह बिल्कुल नहीं मालूम था कि पढ़ना-लिखना क्या है? लेकिन स्कूली किताबों के अलावा जो कुछ भी पढ़ पाया उसने मुझे एक बेहतर नागरिक बनने या

होने में मेरी भरपूर मदद की. एक शिक्षक के रूप में अपने स्कूल में आज जो भी नया कर पा रहा हूं उसमें बालपन से अब तक पढ़ी गई किताबों से उपजी साझी समझ का बहुत बड़ा योगदान है. पढ़ने ने मुझे शब्द-सम्पदा का धनी बनाया, लेखन में एक अपनी शैली विकसित करने में सहारा दिया और चीजों को समझने की दृष्टि भी भेंट की. मेरा भाषा और गणित का आरम्भ एक साथ हुआ बल्कि यह कहना कहीं अधिक ठीक रहेगा कि दोनों प्रत्येक व्यक्ति के शुरुआती सीखने में साथ-साथ चलते हैं. शब्द राह दिखाते हैं, अक्षर लुकाछिपी का खेल खेलते-खेलते नये शब्द रचवा लेते हैं. आज जब पीछे मुड़कर देखता और विचार करता हूं कि पढ़ने-लिखने की शुरुआत कब, कैसे, कहां हुई तो तीन छोर नजर आते हैं. तो अभी मैं एक छोर पकड़ कर आपको ले चलता हूं अपने गांव बल्लान. बल्लान, जिला मुख्यालय बांदा से यही कोई चालीस किमी दूर पूरब की ओर बसा मिश्रित आबादी का मेरा गांव जहां मैंने अपनी आंखें खोलीं और जीवन की किताब का पहला पन्ना भी. घर के चारों ओर खेतों में भैंसलोट, परसन, तुलसी भोग, लोचई, महाचिन्नावर धान की पसरी खुशबू मन मोह लेती। पत्तियों और घास पर पड़ी ओस की बूंदें चमकतीं और 3-4 वर्ष का मैं उनके मोहपाश में बंधा गिन-गिन कर हथेली में भर लेना चाहता. पर हर बार मेरे हाथ रिक्त होते और आंखें भरी। दादी टोकतीं, 'तुमने ज्यादा ले लिया ना, दूसरे बच्चे का हिस्सा भी. इसीलिए मोती टूट गये, समझे.'' और फिर गिनकर चार-पांच मोती मेरी हथेली पर रख देतीं, एक के बाद एक. बहुत बाद में जान पाया कि दादी ने तो गणित का जोड़-घटाव ही नहीं पढ़ा दिया था बल्कि सामाजिक उत्तरदायित्व का सूत्र भी अन्तर्मन में कहीं गहरे उतार दिया था कि प्रकृति से थोड़ा और अपने हिस्से का ही लो.

दूसरा छोर, मेरी माता जी श्रीमती रामबाई, जिन्हें हम सब भाई बहन अम्मा कह के बुलाते हैं, ने दादी की सिखावन की कड़ी को आगे बढ़ाया. कहीं से मिल गई फटी

'हिन्दी बाल पोथी' के अक्षर और तरह-तरह के चित्रों से प्रथम परिचय अम्मा ने ही करवाया. नहला-धुला के बखरी में बैठा पोथी पकड़ा देतीं और स्वयं वहीं घर के काम करती जातीं. जांत में गेहूं पीसना हो, आंगन में सूखने के लिए धान फैलाना, कोनइता में धान दरकर बगरी बनाना या फिर 'कांणी' में बगरी कूटना. महीनों मैंने केवल वर्णमाला सिखाने वाले उन अनगढ़ चित्रों को ही देखने में बिताया. अम्मा चित्रों को पहचान कर उनके नाम उच्चारण करतीं और मैं दुहराता रहता. ऐसा करते वे मुझे याद हो गये. घर के सामने की धूल भरी धरती मेरी पाटी बनी और अम्मा ने मेरी उंगली को कलम बनाकर मुझे पहला अक्षर 'क' बनाना सिखाया था. जाडे के मौसम में दरवाजे के पार उगी दूब ओस से नहाई होती और मैं दूसरे बच्चों के साथ अपनी उंगली से वर्णमाला का कोई अक्षर या चित्र बना रहा होता था. तीसरा छोर मेरी औपचारिक शिक्षा के आरम्भ होने से जुड़ा है. 6 साल का होते-होते मैं गांव की पगडण्डी छोड़ अध्यापक पिता श्री बाबूलाल दीक्षित साहित्याचार्य के साथ अतर्रा कस्बे मे आ गया था. मेरी पढ़ने की औपचारिक शुरुआत यहीं से हुई. ब्रह्म विज्ञान शिशु सदन में मेरी पाटी पूजा हुई और पक्के एक में नाम लिखा गया. यहां पढ़ने एवं सीखने का विस्तृत फलक मिला. मुझे अच्छी तरह से याद है कि स्कूल में होने वाली बाल सभा में मैं गीत-कहानी सुनाया करता था. घर में कोई साहित्यिक माहौल तो नहीं था पर पिताजी 'धर्मयुग' और कुछ अन्य पत्रिकाएं नियमित लाया करते थे, जिसे मैं चोरी-चोरी पढ़ लिया करता था. घर में लोहे का एक पुराना बड़ा संदूक था जिसमें किताबें भरी रहा करतीं थीं. बरसात बाद पिताजी किताबों को धूप दिखाते थे. ये किताबें मुझे अपने पास बुलातीं, मेरा मन खींचतीं थीं. मैं जानने को उत्सुक था कि उनमें क्या है. सन् 1981 की गर्मियों के अलस भरे लम्बी छुट्टी के दिन, कक्षा छह उत्तीर्ण करने के कारण कुछ विषयगत पढ़ने को था नहीं. कुछ न कुछ पढ़ने की आदत बन जाने के कारण मन में जिज्ञासा हुई कि संदूक मे से कुछ निकाला जाये, पर पिताजी की डांट-डपट का डर. मन संदूक में

रम गया था और एक दिन धीरे से एक मोटी किताब निकाल ली. संयोग से वह कथा सम्राट प्रेमचन्द्र का उपन्यास 'गोदान' था. तो घर के सामने लगे बरगद की छांव तले सात दोपहर में चोरी-चोरी ''गोदान'' पढ़ा. 'गोदान' में वर्णित तत्कालीन परिस्थितियों ने बाल मन पर गहरा असर डाला और सामाजिक ताने-बाने को समझने की एक दृष्टि भी दी. तब अंकुरित हुए सामाजिक समरसता, समानता, सहिष्णुता, करुणा, न्याय एवं बन्धुत्वभाव आज विकसित होकर विस्तृत फलक को अपने में समेट लिए हैं. अगली पुस्तक जो हाथ लगी वह थी देवकी नन्दन खत्री का उपन्यास 'चन्द्रकान्ता'. गोदान के यथार्थ धरातल से बिल्कुल उलट कल्पना की दुनिया की भावभूमि में बुने 'चन्द्रकान्ता' ने मन को बांध लिया था. वृन्दावनलाल वर्मा की 'मृगनयनी' को कैसे भूल सकता हूं, ऐतिहासिक सन्दर्भों को कल्पना के धागे में पिरोकर पाठक के चित्त को चुरा लेने की कला का दर्शन भी तभी कर लिया था. और हां, चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' की कहानी 'उसने कहा था' भी पढ़ी थी जो किसी अखबार के रविवासरीय पन्ने में छपी थी और आज भी जिसकी कटिंग मेरे पास सुरक्षित है. तमाम व्यस्तता के बावजूद मैं पढने-लिखने का मौका ढूंढ लेता हूं और किसी दिन यदि कुछ पढ़-लिख नहीं पाया तो खालीपन महसूस करता हूं. नई-नई किताबों कों पढ़ने की भूख और नया सीख पाने की ललक बहुत बढ़ गई है. इतना सब पढ़ने के बाद भी पढ़ने और लिखने से मन नहीं भरा. तो मेरी प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा प्राप्त करने में मुझे कोई परेशानी नहीं हुई. नियमित अखबार और पत्रिकाएं पढ़ने के कारण मेरा सामान्य ज्ञान अन्य हमउम्र बच्चों से कहीं अधिक बेहतर और समृध्द था जिसका मुझे आगे बहुत लाभ मिला.

लेखक पर्यावरण, महिला, लोक संस्कृति, इतिहास एवं शिक्षा के मुद्दों पर दो दशक से शोध एवं काम कर रहे हैं। मोबा - 09452085234

कहानी पूरी करो

पिछले अंक में हमने आपको यह अधूरी कहानी पूरी करने के लिए दी थी -

अधूरी कहानी - झील का राक्षस

एक जंगल था. उसमे बहुत से जानवर रहते थे. जंगल के बीच में एक झील थी जिसका पानी जंगल के सभी जीव जंतु पीते थे. एक दिन की बात है जंगल की झील से एक राक्षस निकला. उसने सभी जंगल में रहने वालों से कहा - “आज के बाद अगर किसी ने इस झील का पानी पिया तो में उसे खा जाऊंगा.” यह सुन सभी जानवर भयभीत हो गये. उस दिन के बाद से कोई भी उस झील का पानी पीने नही जाता था.

कुछ समय बाद जंगल में सूखा पड़ गया. जंगल के सभी छोटी-छोटी नदियाँ सूख गयी. फिर एक दिन सभी जानवर इकट्ठा हो कर उस झील के पास गए जहाँ राक्षस रहता था. सभी जानवरों ने बोला - "इस झील के महाराज कृपया बाहर आए और हमारी परेशानी सुने." इतना बोलते ही राक्षस बाहर आ गया. वह बहुत विशाल और डरावना था. वह गुस्से से बोला- क्यों मुझे जगा दिया?"

सभी जानवर ने बोला - "महाराज कृपा कर जब तक इस जंगल में सूखा पड़ा है तब तक इस जंगल के सभी जानवरों को पानी पीने दीजिये महाराज..!!"

यह सुन राक्षस तिलमिला उठा उसने कहा - "इस झील के अंदर किसी ने पैर भी रखे तो में उसे खा जाऊंगा..!!" यह बोल राक्षस वापस पानी में चला गया. अब सभी जानवर दुखी होकर एक पेड़ के नीचे बैठ गए. तभी उस जंगल के एक सबसे बूढ़े बंदर ने कहा - "सुनो में एक उपाय बताता हूँ ..!!"

<u>इन्द्रभान सिंह कंवर व्दारा पूरी की गई कहानी</u>

तभी उस बूढ़े चालाक बंदर ने सभी को एकत्रित कर एक उपाय बतायी. उसने सभी जानवरो को जंगल की सूखी पत्तियाँ एकत्रित करने को कहा. सभी ने मिलकर खूब सारी सूखी पत्तियाँ एकत्रित कीं. उसके बाद उस सूखी पत्तियों के ढेर पर आग लगवायी और पुनः उस झील के राक्षस के पास चलने को कहा.

सभी ने उसकी बात मानकर पुनः झील के राक्षस के पास जाने की हिम्मत जुटाई और फ़िर उस राक्षस के पास गये. वहां जाकर उन्होंने उस राक्षस को आवाज लगाई - महाराज जरा बाहर आइये. उनकी आवाज सुनकर वह राक्षस झील से बाहर

निकला और बोला – 'तुम लोग फ़िर यहाँ आ गये. लगता है तुम लोगों को अपनी जान की चिन्ता नही है.'

तभी उस बूढ़े चालाक बंदर ने आगे आते हुए कहा - 'महाराज हमें अपने जान की चिन्ता तो है मगर...' राक्षस ने पूछा - 'मगर क्या...' तब उस बंदर ने कहा – 'महाराज हमसे आपकी बुराई सही नही गयी इसलिए हम सब लोग आपके पास आये हैं.'

तब उस राक्षस ने पूछा कि किसने मेरी बुराई की. तब बंदर ने बताया कि महाराज जंगल में एक और महाराज आया है जो अपने आप को आपसे भी ताकतवर बता रहा है और धीरे-धीरे पूरे जंगल में अपना राज फ़ैला रहा है. यह सुनकर राक्षस गुस्से से लाल हो गया. उसने पूछा - 'कौन है वो. मुझे उसके पास ले चलो. उसे अभी मजा चखाता हूँ.'

सभी उसे उस आग वाली जगह पर ले गये. वहाँ आग की लपटें धधक रही थी. बंदर ने आग की लपटो की ओर इशारा करते हुए कहा – 'महाराज यही है वो जो अपने आप को आप से भी जादा ताकतवर बता रहा है.' यह बात सुनकर वह राक्षस गुस्से से उस आग में कूद गया और अपनी जान गंवा बैठा. इस तरह उस राक्षस का अंत हो गया. सभी ने उस बूढ़े बंदर की प्रशंसा की.

सीख - कठिन परिस्थितियों में भी हमें अपना धैर्य नही खोना चाहिये और अपने विवेक का इस्तेमाल करना चहिये.

पद्यमनी साहू द्वारा पूरी की गई कहानी

बूढ़े बंदर ने कहा कि राक्षस की एक छोटी बेटी व उसकी पत्नी उसी झीलमें रहती हैं. सभी जानवर बूढ़े बंदर के पास आ गए वह उसकी बातें ध्यान से सुनने लगे. सब ने एक स्वर में कहां अच्छा विचार है. बूढ़े बंदर के घर में उसकी पत्नी उसका बेटा बहू एवं उसके पोते पोतियां भी रहते थे. शाम का समय था. बूढ़े बंदर ने कहा चलो आज मैं तुम्हें झील के किनारे घुमाने ले जाता हूं. बूढ़े बंदर के पोते पोतियां झट से तैयार हो गए. छोटे बंदर खुशी से उछलने कूदने लगे, कि आज हमें दादाजी घुमाने ले जायेंगे. छोटे बंदर झील के किनारे पहुंचकर खूब मजा करने लगे उछलने कूदने लगे. झील के किनारे कई फलदार वृक्ष थे. छोटे बंदर मीठे मीठे फल तोड़ कर लाते वह अपने दादाजी को देते वह स्वयं भी खाते. तभी झील से राक्षस की बेटी निकली छोटे बंदरों को मस्ती करते देख उसे उनके साथ खेलने की इच्छा हुई. छोटे बंदरों के पास आकर बोली मेरा कोई दोस्त नहीं है. भाई बहन भी नही हैं जिनके साथ में खेल सकूं. क्या तुम मुझे अपने साथ खेलने दोगे. छोटे बंदर ने कहा क्यों नहीं बहन. आओ तुम भी हमारे साथ खेलो. छोटे बंदर मीठे मीठे फल लाकर राक्षस की बेटी को देने लगे. वह बहुत खुश हुई. उसने कहा आज तक मैंने ऐसे स्वादिष्ट फल कभी नहीं खाए थे. कुछ समय बाद बड़े बंदर ने कहा अब चलो बच्चों अंधेरा होने वाला है. छोटे बंदर मुश्किल से चलने को राजी हुए. राक्षस की बेटी को उनका जाना अच्छा ना लगा. वह कुछ दिनों के लिए उनके साथ जाने की जिद करने लगी. छोटे बंदरों ने भी कहा - 'दादा जी ले चलो ना'. राक्षस की बेटी बंदरों के साथ चली गई. बंदर एक से बढ़कर एक करतब दिखाते नकल उतारते व राक्षस की बेटी का मनोरंजन करते. विभिन्न प्रकार के मीठे ताजे जंगली फल लेकर आते. इस तरह 2 दिन बीत गए. उधर बेटी के गायब होने से राक्षस बहुत परेशान था. राक्षस की पत्नी झील के किनारे विलाप करने लगी. उसका विलाप सुनकर

जंगल के जानवर झील के पास आ गए. राक्षस ने कहा - 'जो कोई भी मेरी बेटी का पता लगाएगा मैं उसे मुंह मांगा इनाम दूंगा. तुम सब जंगल के कोने कोने में जाओ और मेरी बेटी का पता लगाओ.' सभी राक्षस की बेटी की तलाश करने लगे. कुछ समय बाद बूढ़ा बंदर राक्षस की बेटी को साथ लेकर आया. साथ में छोटे बंदर भी थे. बहुत सारे फलों से भरा टोकरा भी साथ लाए थे. बेटी को देखकर राक्षस की पत्नी को बहुत खुशी हुई. वह अपनी बेटी को सीने से लगा कर उसे बहुत प्यार करने लगी. राक्षस ने कहा मांगो तुमहे क्या चाहिए. चतुर एवं बूढ़े बंदर ने कहा यदि आप मुझपर प्रसन्न है तो जंगल के सभी जानवरों की प्यास मिटाने के लिए जंगल झील का पानी पीने की अनुमति प्रदान करें. राक्षस वचनबध्द था. उसने हां कह दी. प्यास से व्याकुल जानवर झील का पानी पीकर तृप्त हो गए एवं राक्षस को धन्यवाद देने लगे. सभी जानवर वापस अपने आवास की ओर जाने लगे. तभी राक्षस की बेटी ने छोटे बंदरों से कहा - 'तुम लोग रोज शाम को मेरे साथ खेलने जरूर आना'. छोटे बंदरों ने रोज आने का वादा किया. इसे कहते हैं बुध्दिमानी - सांप भी मर जाए और लाठी भी न टूटे.

<u>कन्हैया साहू (कान्हा) व्दारा पूरी की गई कहानी</u>

बंदर ने सभी जानवरो से कहा कि ऐसे तो हम बिना पानी पिये मर जायेंगे. मेरे दिमाग मे उस राक्षस को इस झील से भागने का उपाय है. बंदर ने सभी जानवरो को अपने मन की बात बताई. सभी ने उसकी तरकीब पर सहमति जताई. फिर सभी जानवर उस राक्षस के पास गए. बंदर ने झील के पास जाकर आवाज लगाई. गुस्से से आँखे लाल करता हुआ राक्षस झील से बाहर आया. उसने पूछा - 'क्या तुम सबकी शामत आई है जो मुझे नींद से जगा दिया.' तब बहुत ही विनम्रता

पूर्वक बंदर ने कहा - 'हम सब आपको सावधान करने के लिए आये हैं. इस जंगल मे एक जादूगर आया है जो बहुत ही ताकतवर है. और वह अपनी जादुई ताकत से जंगल के सभी छोटे बड़े जीवों को अपने कब्जे में कर रहा है. एक दो दिनों में वह इसी झील की तरफ आने वाला है इसलिए हम सब जान बचा कर इस जंगल से दूर किसी दूसरे जंगल मे जा रहे हैं. वह जादूगर अपने जादू से झील के पानी को सुखा कर पानी मे रहने वाले जीवों को भी अपने कब्जे में कर लेगा.' बंदर की बात को सुनकर पहले तो राक्षस को यकीन नही हुआ लेकिन उसके मन मे डर पैदा हो गया. डर के कारण राक्षस रात में सो भी नही पाया. सुबह सुबह सभी जानवर दूसरे जंगल जाने की बात कहते हुए झील के किनारे से निकलने लगे. उनकी बातों को सुनकर अब राक्षस को यकीन हो गया कि जादूगर वाली बात सही है. सभी जानवर थोड़ी दूर जाकर एक पहाड़ के पीछे छिप कर देखने लगे कि राक्षस उस झील से जाता है या नही. जब जंगल सुनसान हो गया तो राक्षस और डर गया. उसे लगा कि इस जंगल के सभी जानवर जादूगर से जान बचा कर चले गए हैं. मैं इस झील में रहा तो जादूगर मुझे अपना गुलाम बना लेगा. गुलाम बनने से तो अच्छा है कि इस झील से कही दूर चला जाऊं. राक्षस उस झील से चुपचाप निकल कर दूसरे जंगल की एक बड़ी झील में जाकर रहने लगा. सभी जानवर ने राक्षस के जाने के बाद वापस जंगल मे आकर झील का पानी पिया. फिर सभी जानवरो ने एक सभा बुला कर उस बूढ़े बंदर की बुध्दिमानी की तारीफ की. उसे धन्यवाद दिया और उसका सम्मान किया. अब सभी जानवर जंगल मे मिलजुल कर रहते हैं और जंगल के फल-फूल खाते हैं. इस तरह एक बूढ़े बंदर की चतुराई से सभी जानवरो को उस राक्षस के आतंक से मुक्ति मिल गई.

सीख :- बुध्दिमतता से बड़ी से बड़ी समस्या को दूर किया जा सकता है.

अगले अंक के लिये इस मज़ेदार कहानी को पूरा करके हमें dr.alokshukla@gmail.com पर भेज दीजिये. अच्छी कहानियां हम अगले अंक में प्रकाशित करेंगे.

अधूरी कहानी - फिर नहीं ललकारा

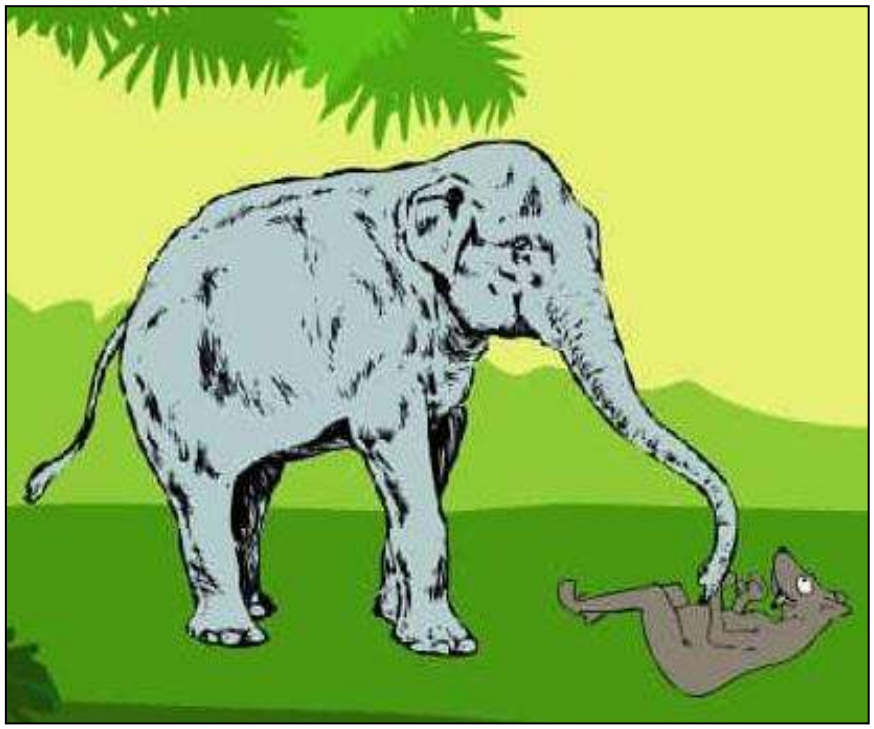

बैडी सियार को इन दिनों पहलवानी का शौक चढ़ा था. उसने अच्छी-खासी रकम देकर जंबों हाथी से पहलवान के गुण भी सीख लिए थे. जंबों हाथी ने एक दिन बैडी सियार से कहा- "अब तुम अच्छे पहलवान बन गए हो. मैंने तुम्हें खास और बड़े सभी दांवपेंच सीखा दिए हैं. मुझे नहीं लगता कि कोई तुम्हे आसानी से पटकनी दे सकता है." बैडी खुश होते हुए बोला- "तो उस्ताद इसका मतलब ये हुआ कि मैं चंपकवन का नामी पहलवान बन गया हूं न?" जंबों हाथी बोला-

चित्र देखकर कहानी लिखो

पिछले अंक में हमने आपको कहानी लिखने के लिये यह चित्र दिया था -

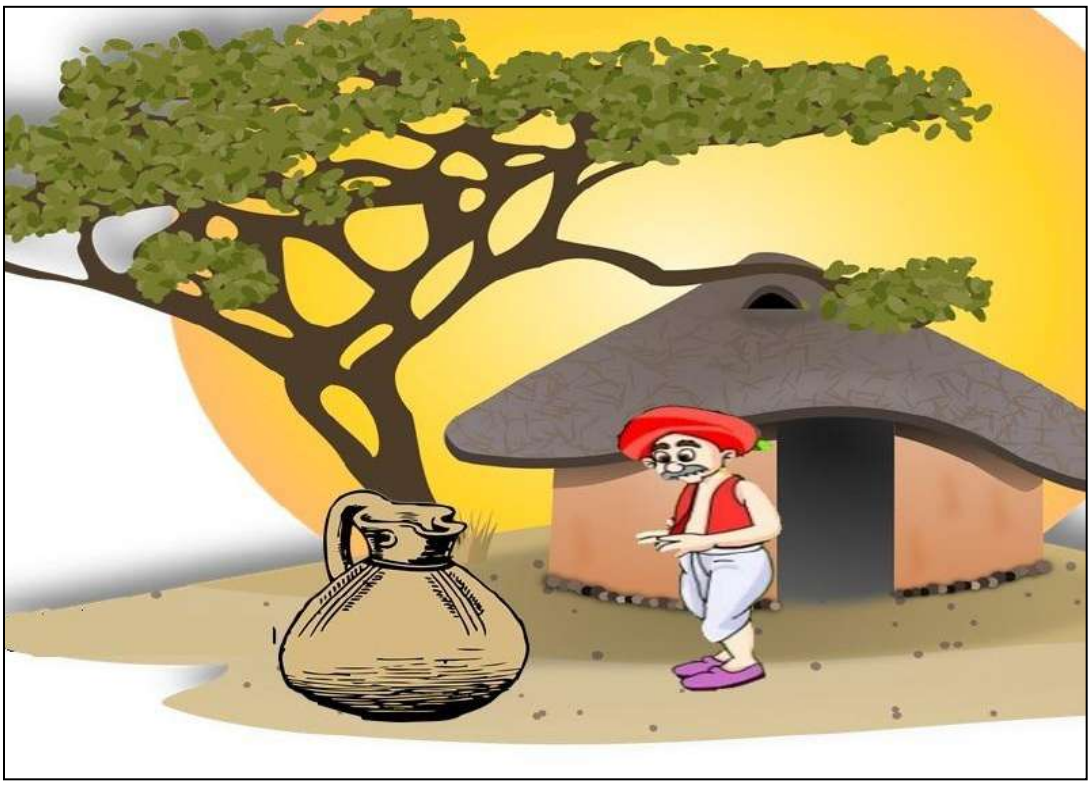

इस चित्र पर हमें कई मज़ेदार कहानियां मिली हैं. कुछ को हम यहां प्रकाशित कर रहे हैं -

सच्चाई और ईमानदारी का फल

लेखक - इन्द्रभान सिंह कंवर

एक नगर में एक किसान रहता था. वह बहुत ही सच्चा और ईमानदार था. पूरे नगर में उसकी सच्चाई और ईमानदारी की कहानियाँ प्रसिध्द थीं. लोग उसकी ईमानदारी की मिसाल दिया करते थे.

धीरे-धीरे यह बात वहाँ के राजा के कानो तक जा पहुंची. राजा ने उसकी सच्चाई और ईमानदारी की परीक्षा लेनी चाही. एक दिन राजा ने रात में उसके घर के सामने एक सिक्कों से भरा मटका रखवा दिया.

सुबह जब किसान अपने खेत के काम पर जाने के लिये निकला तो उसने घर के सामने पड़े मटके को देखा. उसने अपने आस-पास चारों ओर देखा पर वहाँ कोई दिखाई नही दिया. किसान ने अपने मन में विचार किया कि कहीं किसी का मटका यहाँ छूट तो नही गया. वह उसे लेकर राज दरबार की ओर चल पड़ा. उसे राजा के सामने पेश कर कहा - 'महाराज न जाने यह किस व्यक्ति का है जो मेरे घर के पास पड़ा था. आप नगर में मुनादी करा के इसको इसके सही मालिक के पास पहुँचवा दीजिये.'

राजा यह सब सुनकर खुश हुआ और उसने किसान से कहा – 'हमने आज तक बस तुम्हारी सच्चाई और ईमानदारी की कहानी सुनी थी परन्तु आज हमने उसे देख भी लिया. तुम वास्तव में बहुत सच्चे और ईमानदार हो.' राजा ने किसान की सच्चाई और ईमानदारी से खुश होकर, उसे वह सिक्के से भरा मटका उपहार में प्रदान कर दिया और साथ ही साथ उस ईमानदार किसान को अपना न्यायिक सलाहकार भी नियुक्त कर दिया.

सीख - सच्चाई और ईमानदारी का परिणाम अच्छा और सुखद होता है.

चमत्कारी सुराही

लेखिका - पद्यमनी साहू

घनघोर जंगल में एक तपस्वी साधना कर रहे थे. उन्होंने कई वर्षों तक वरुण देवता की घोर तपस्या की. उनकी तपस्या से प्रसन्न होकर वरुण देवता प्रकट हुए. उन्होंने एक सुराही प्रदान की और कहा कि यह कोई साधारण सुराही नहीं है. वरुण देवता के वरदान से प्राप्त सुराही को लेकर तपस्वी अपने घर की ओर चले गए. बहुत दूर पैदल चलते चलते जब थक गए तो एक पेड़ के नीचे विश्राम करने के लिए रुके. थकान के कारण उनकी आंख लग गई. आंख खुली तो उन्होंने देखा कि शाम होने वाली है. वे जल्दी-जल्दी घर की ओर कदम बढ़ाने लगे. जल्दबाजी में वे सुराही पेड़ के नीचे ही भूल गए. सुराही जिस स्थान पर थी उसी पेड़ के पास सोनपुर ग्राम के निवासी गोपाल किसान का घर था. मार्च अंक में हमने गोपाल और उसके मित्र विषधर की कहानी पढ़ी थी. क्यों बच्चों याद है कि नहीं. हां वही गोपाल जब सवेरे सो कर उठा और अपने घर से बाहर निकला तो उसने वह सुराही देखी. सुराही देखकर गोपाल आस पास सुराही के मालिक को खोजने लगा. गोपाल ने दूर तक नजर दौड़ाई लेकिन सुराही के मालिक का पता ना चल सका. किसी और की अमानत मानकर गोपाल ने सुराही अपने घर में रख ली. गोपाल सुराही के मालिक की प्रतीक्षा करता रहा. बहुत दिन बीत गए पर सुराही के मालिक का पता ना चल सका. गोपाल के गांव में काशी से पधारे हुए बहुत बड़े विव्दान का प्रवचन चल रहा था. दूर-दूर से लोग काशी से आए पंडित जी के दर्शन करने और प्रवचन सुनने आते थे. एक दिन बहुत दूर के गांव से 50-60 लोग गोपाल के गांव सोनपुर में पंडित जी के दर्शन करने पैदल यात्रा करते आ रहे थे. थकान लगने पर गोपाल के घर के पास वाले पेड़ के नीचे विश्राम करने लगे. गोपाल प्रवचन सुनने घर से बाहर निकला तो वे लोग गोपाल को देख कर पानी पिलाने का आग्रह करने लगे.

गोपाल घर के अंदर गया उचित पात्र ना मिलने पर उसी सुराही में कुएं से पानी भरकर लाया. उसने सभी को पानी पिलाया. ताजा ठंडा मीठा पानी पीकर सभी गोपाल का धन्यवाद करने लगे. गोपाल ने देखा कि 50-60 लोगों को पानी पिलाने के बाद भी सुराही खाली नहीं हुई थी. सभी लोग उस चमत्कारी सुराही की चर्चा करते-करते प्रवचन स्थल पहुंच गए. गोपाल ने सुराही को पलट कर रख दिया. गोपाल सोचने लगा यह कोई साधारण सुराही नहीं है. यह एक चमत्कारी सुराही है. यह सुराही ज्यादा से ज्यादा लोगों के काम आए तो अच्छा होगा. यह सोच कर गोपाल ने सुराही प्रवचन कर्ता पंडित जी को भेंट कर दी और उन्हें सुराही के चमत्कारी गुण के बारे में बताया. गोपाल ने कहा कि जहां-जहां आपका प्रवचन होगा वहां भंडारे में लोगों को पानी पिलाने के काम आएगी. सभी गोपाल के इस कार्य की सराहना करने लगे. गोपाल ने कहा कार्य वही अच्छा जिससे केवल एक व्यक्ति का नहीं हजारों व्यक्तियों का भला हो.

<u>सेनापति का चयन</u>

लेखिका - सेवती चक्रधारी

जयगढ़ राज्य के सेनापति की अकाल मृत्यु से सारा राज्य दुखी था क्योकि सेनापति बहुत साहसी, ईमानदारऔर न्याय प्रिय थे. राजदरबार मे इसी बात पर चर्चा चल रही थी अब सेनापति की जगह कौन लेगा. राजा जयसिंह ने कहा कि आप मंत्रीगण ही इस समस्या का समाधान निकाले. सभी मंत्रीगण निरुत्तर थे क्योकि सब को ऐसा लग रहा था कि सेनापति जैसा गुणी कोई नही हो सकता. तभी राजगुरू ने कहा कि महाराज आपकी आज्ञा हो तो मै कुछ कहूं. राजा ने हामी भर दी। राजगुरू ने कहा - 'महाराज, राज्य की सीमा से लगे एक गांव से थोडी दूर

मे कृष्णा नाम का एक लकड़हारा रहता है. एक बार मै यज्ञ पूर्ण कर जंगल से होते हुए आ रहा था. अचानक बाघ ने मेरा रास्ता रोका. तब कृष्णा ने बड़ी बहादुरी से निहत्थे बाघ से लड़कर मेरी जान बचाई. जब मैने इसके बदले उसे उपहार स्वरूप सोने के सिक्के देने चाहे तो उसने विनम्रता पूर्वक मना कर दिया. तो महाराज क्या हम उसे सेनापति नही बना सकते'. यह सुनकर कुछ मंत्रियो ने कहा कि उसे युध्द कौशल नही आता होगा. राजगुरू ने कहा - 'युध्द कौशल सिखाया भी तो जा सकता है. राज गुरू ने पुनः कहा कि आप चाहे तो उसकी बहादुरी व ईमानदारी की परीक्षा ले सकते हैं.' सभी को यह बात सही लगी और सबने हामी भर दी. राजा और राजगुरू कुछ सैनिक को साथ लेकर कृष्णा की परीक्षा लेने निकल पड़े. राजा की आज्ञा पाकर सैनिको ने डाकुओ का वेश बनाकर जंगल मे कृष्णा पर हमला कर दिया. कृष्णा ने बड़ी बहादुरी से सभी को हरा दिया. इधर राजा व राजगुरू ने उसके घर के दरवाजे पर सोने के सिक्को से भरी थैली रख दी. जैसे ही कृष्णा दरवाजे पर पहुंचा उसने थैली देखी, उसे उठाया और अंदर चला गया. थोड़ी देर मे शाम हो गई और राजा व राजगुरू, कृष्णा के पास गए और एक रात ठहरने के लिए आश्रय मांगा. कृष्णा ने सहर्ष स्वीकार किया. गरीब होने के कारण कृष्णा के पास अतिरिक्त भोजन नही होता था. इस कारण उसने अपने व अपने पत्नी के हिस्से का भोजन उन्हे दे दिया. सोते वक्त राजा ने कृष्णा की बाते सुनी जो वह पत्नी से कह रहा था - 'कल कोतवाल से कहकर उस धन की थैली को राजकोष मे जमा करवा दूंगा.' राजा बहुत प्रसन्न था कि उसे योग्य सेनापति मिल गया.

अब नीचे दिये चित्र को देखकर कहानी लिखें और हमें dr.alokshukla@gmail.com पर भेज दें. अच्छी कहानियां हम किलोल के अगले में प्रकाशित करेंगे.

लेख - कलिंदर खाव रोग भगाव

लेखक - महेन्द्र देवांगन माटी

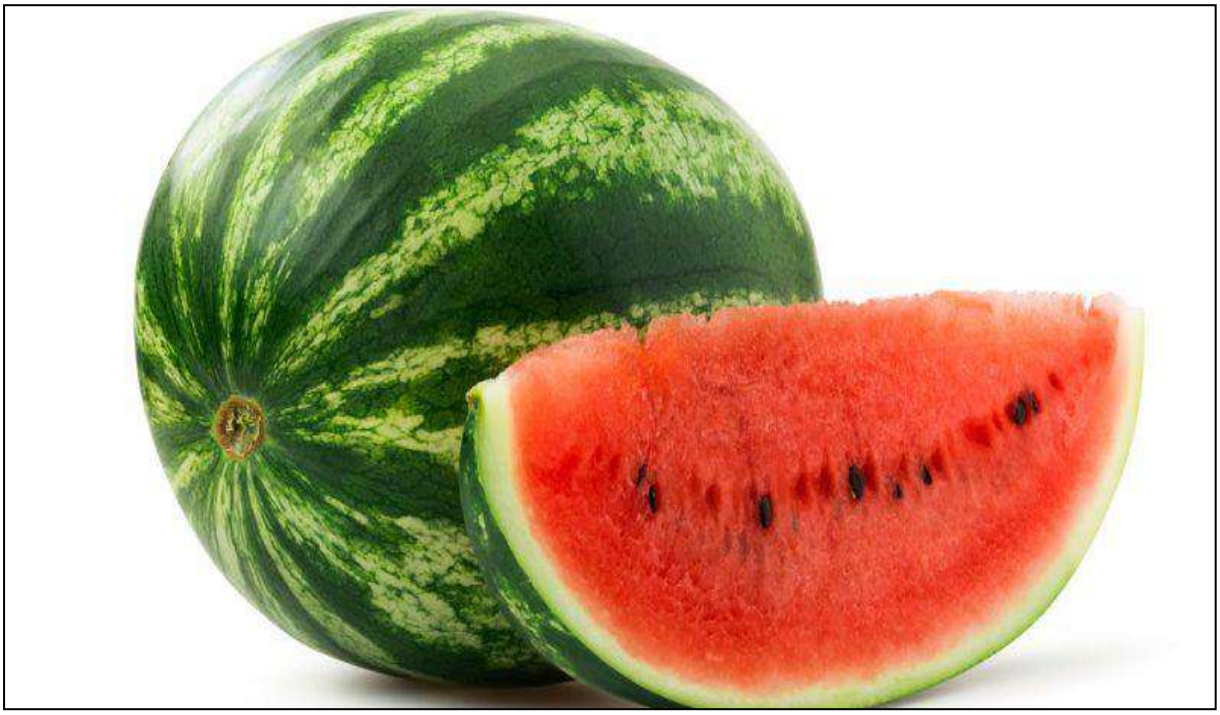

कलिंदर के नाम सुनते साठ मुँहू मा पानी आ जाथे. काबर कलिंदर खाय मा बहुत मजा आथे, अउ विटामिन भी भरपूर रहिथे. नान - नान लइका मन जब कलिंदर खाथे त ओकर पानी ह हाथ के कोहनी तक चुचवात रहिथे. कपड़ा लत्ता सबो सना जाथे. देखइया मन तक भारी मजा लेथे. कलिंदर ल हिन्दी मा तरबूज कहे जाथे.

रुप रंग - कलिंदर के फर ह गोल आकार के होथे । येकर वजन ह एक किलो से दस किलो तक घलो होथे. एकर उपर ह हरियर रंग के होथे अउ भीतरी ह लाल रंग के होथे. लाल - लाल गुदा के बीच - बीच मा छोटे - छोटे करिया - करिया बीजा घलो रहिथे. कलिंदर के लाल भाग ल खाय जाथे अउ बीजा ल फेंक देथे या बीजहा राखे के काम आथे.

<u>सुवाद</u> - कलिंदर मा पानी के मात्रा जादा रहिथे , फेर खाय मा बहुत स्वादिष्ट अउ मीठा लागथे. येला लइका सियान सबोझन रुचि पूर्वक खाथे. भोभला मनखे मन तक येला चबा के खा सकथे.

खेती - कलिंदर के फसल ह गरमी के मौसम मा जादा होथे. जतके जादा गरमी रहिथे ओतके जादा एकर फसल होथे. कलिंदर के फसल ह रेती मा या रेती वाला माटी मा जादा होथे. एकर अधिकांश खेती ह नदियाँ के किनारे जादा होथे. नदियाँ के रेती मा भी येला बोंये जाथे. नदियाँ के तीर मा बोंथे तेमन ह येला अक्टूबर - नवंबर मा बोंथे अउ मैदानी क्षेत्र वाले मन फरवरी - मार्च मा बोंथे. येला क्यारी बना के बोंये जाथे. एकर नार ह बहुत लंबा - लंबा होथे.

कलिंदर के फायदा - कलिंदर खाये मा बहुत सुवाद तो रहिथे ही साथ मा बहुत फायदा भी होथे.

1. येहा खाना ल जल्दी पचाथे.
2. रोज खाय से मोटापा कम होथे.
3. तवचा रोग मा बहुत फायदा करथे.
4. सेंधा नून ल डार के खाय ले खट्टा डकार बंद हो जाथे.
5. येमा विटामिन ए बी सी अउ लोहा के मात्रा भरपूर पाये जाथे, जेकर से खून के कमी दूर होथे अउ साफ होथे.

<u>सावधानी</u> - कलिंदर ल रात मा नही खाना चाहिए. रात मा खाये से शरीर ल

नुकसान होथे. अइसे डाक्टर मन बताये हे. गर्भवती महिला मन ल भी जादा कलिंदर नइ खाना चाहिए. एकर से नुकसान हो सकथे.

कलिंदर ह हमर देश के सबो जगह मिलथे. गरमी के दिन मा जगा - जगा ठेला मन मा भी बेंचात रहिथे. येला मंझनिया कुन खाय ले जादा मजा आथे.

अमर बलिदान

लेखिका - पुष्पा नायक

मेरे वतन के अभिमान हो तुम

भारत भूमि की शान हो तुम

देश द्रोहियो ने पीठ मे खंजर घौंपा है

हम सामने से वार कर दिखाएंगे

तेरी शहादत को हम कभी न भूल पाएंगे।

माँ ने बेटा तो किसी ने माँग का सिंदूर मिटाया है

कही बेटी विलाप में रोई है

तो किसी बेटे ने खोया सर का साया है

वापस लौट मेरे नाम की मेंहदी लगाऊँगा

कह चला गया वो राह तकती नज़रों ने आस का अश्रू छलकाया है

जन्नत में तेरा मान होगा

इस वतन में चिरंतर तेरा नाम होगा

हम उस देशद्रोही को यही दोजख़ दिखाएंगे

तेरे खून के एक-एक कतरे का हिसाब चुकाएंगे

तेरी शहादत को हम कभी न भूल पायेगें

आतंकवाद का आंतक मिटा जाएंगे

पड़ोसी जो दुश्मन बन बैठा है

उसके घर में घुस कर उसे सबक सिखाएंगे

तेरे बलिदान का बदला पूरे ब्याज के साथ चुकाएंगे

ऐ भारत के सपूत तेरी शहादत को हम कभी न भूल पाएंगे

तेरी श्रध्दांजली में देश का तिरंगा दुश्मन मुल्क में जाके लहराएंगे

जय हिन्द जय जवान

आम रसदार है

लेखक - संतोष कुमार साहू (प्रकृति)

१

आम रसदार है, फलों का सरदार है।

चूस -चूस आम, हमको खाना है।।

रोज स्कूल आना है, रोज स्कूल जाना है।।

२

अनार में रस-रस दाना है।

केले को छील-छील खाना है ।।

अमरूद जो प्यार का खजाना है ।।

रोज स्कूल आना है, रोज स्कूल जाना है।।

३

अंगूर में गुच्छों का खजाना है।

भाई-बहन बांटकर खाना है।।

जामुन, संतरा, मौसमी फल जाना है।

रोज स्कूल आना है, रोज स्कूल जाना है ।।

४

राम, सीता, पपीता लुटाना है ।

अनानास विटामिन का खजाना है।

नाशपाती चबा कर खाना है।।

रोज स्कूल आना है, रोज स्कूल जाना है।।

इन्द्रधनुष

लेखक - कमलेश कुमार वर्मा

इंद्रधनुष सा रंग-बिरंगा

प्यारा सा मेरा देश है

भाँति-भाँति की बोली-भाषा

भाँति-भाँति के वेश हैं

जाति, पंथ,संस्कृतियों का

संगम यहां विशेष है

प्रेम और भाईचारे का

गुंजित गान प्रदेश है

इन्द्रधनुष सा रंग-बिरंगा

प्यारा सा मेरा देश है

विंध्य,अरावली, हिमगिरि

अटल और अनिमेष है

गंगा, यमुना, गोदावरी

कृष्णा-कावेरी अशेष है

हिन्द महासागर का जल

करता चरण अभिषेक है

वन,उपवन, सुमन, कलरव

मधुरिम सौंदर्य निःशेष है

इन्द्रधनुष सा रंग-बिरंगा

प्यारा सा मेरा देश है

कला,संगीत, ज्ञान-विज्ञान

सब यहाँ अतिशेष हैं

गुरु-ग्रंथों की अमृतवाणी

मानवता का उपदेश है

धरा प्रेम का भाव यहाँ

दिलों में बसा स्वदेश है

सदियों -सदियों से दे रहा

यह शांति का संदेश है

इंद्रधनुष सा रंग-बिरंगा

प्यारा सा मेरा देश है

कलिन्दर

लेखक - प्रिया देवांगन "प्रियू"

बारी में फरे हाबे सुघ्घर , लाल लाल कलिन्दर ।
बबा ह रखवारी करत ,खात हावय जी बंदर।।
लाल लाल दिखत हे , अब्बड़ मीठ हाबे।
बाजार मे जाबे त , बीसा के तेहा लाबे।।
एक चानी खाबे त , अब्बड़ खान भाथे।
नइ खावँव कहिबे त , मन हा ललचाथे।।
चानी चानी खाबे त , सुघ्घर मन ह लागथे।
सोनू मोनू जादा खाथे , बारी डाहर भागथे।।

गरमी के भाजी

लेखिका - प्रिया देवांगन "प्रियू"

गुरतुर हे इहां के भाजी ह , बड़ सुघ्घर हे लागय।
अम्मट लागथे अमारी हा, सोनू खा के भागय।।

किसम किसम के भाजी पाला , हमर देश मा आथे।
सोनू मोनू दूनो भाई , खोज खोज के लाथे।।

लाल लाल हे सुघ्घर भाजी , अब्बड़ खून बढाथे ।
चैतू समारु खाथे रोजे , सेहत अपन बनाथे ।।

बड़ उलहाये हवय खेत मा , चना लाखड़ी भाजी ।
गुरतुर लागय दूनो हा जी , रांधे सुघ्घर भौजी।।

आये हवय बोहार भाजी , गली गली चिल्लाये।
अमली डार दाई ह रांधे , घर गोहार लगाये।।

लंबा लंबा चैंच भाजी ल , बरी डार के रांधय।
सोनू मोनू दूनो झन हा, जूरी ला हे बांधय।।

चंदा

लेखक - बलदाऊ राम साहू

मोर अँगना मा आबे चंदा

दूध भात तैं लाबे चंदा

मुन्नी गोठियाही हाँस-हाँस

तँहू हर गोठियाबे चंदा ।

गजब मिठाही दूध भात हर

तब्भे पहाही ये रात हर

कभू तैं झन रिसाबे चंदा

जल्दी-जल्दी तैं आबे चंदा।

बड़े बिहनिया सुरुज आही

तब्भे तैं घर जाबे चंदा।

नदिया, तरिया में नहा के

जल्दी स्कूल जाबे चंदा।

हाथी

लेखक - बलदाऊ राम साहू

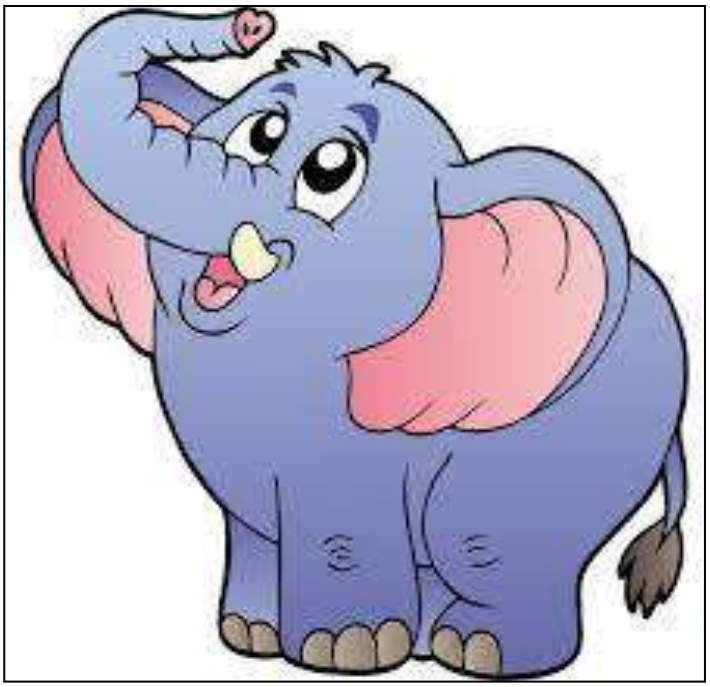

हाथी आया, हाथी आया,

सूंड हिलाते हाथी आया।

देखो कितना है यह भारी,

आओ बच्चों करें सवारी।

बंदर

लेखक - बलदाऊ राम साहू

एक बड़ा था नटखट बंदर

छिप-छिप कर आता था अंदर,

एक दिन वह पकड़ में आया

बूढ़े ने तब यह समझाया।

अगर छिपकर तुम आओगे

मार पिटाई खूब खाओगे

लालच में मत चोरी करना

कभी ना सीना - जोरी करना।

चिड़िया आई

लेखक - बलदाऊ राम साहू

सुनो, सुनो जी चिड़िया आई,

छोटी-छोटी फरियादें लाई।

हमको दे दो मुट्ठी भर दाना,

तभी सुनाएँगे हम गाना।

पानी दे दो एक कटोरी,

नहीं करेंगे सीना जोरी।

दाना खाकर, पानी पीकर,

खुश रहेंगे, निर्भय जीकर।

पेड़ों पर हम रह लेते हैं,

सर्दी, गरमी सह लेते हैं।

आसमान में उड़ जाते हैं,

तारों से खुशियाँ ले आते हैं।

चूहे जी

लेखक - बलदाऊ राम साहू

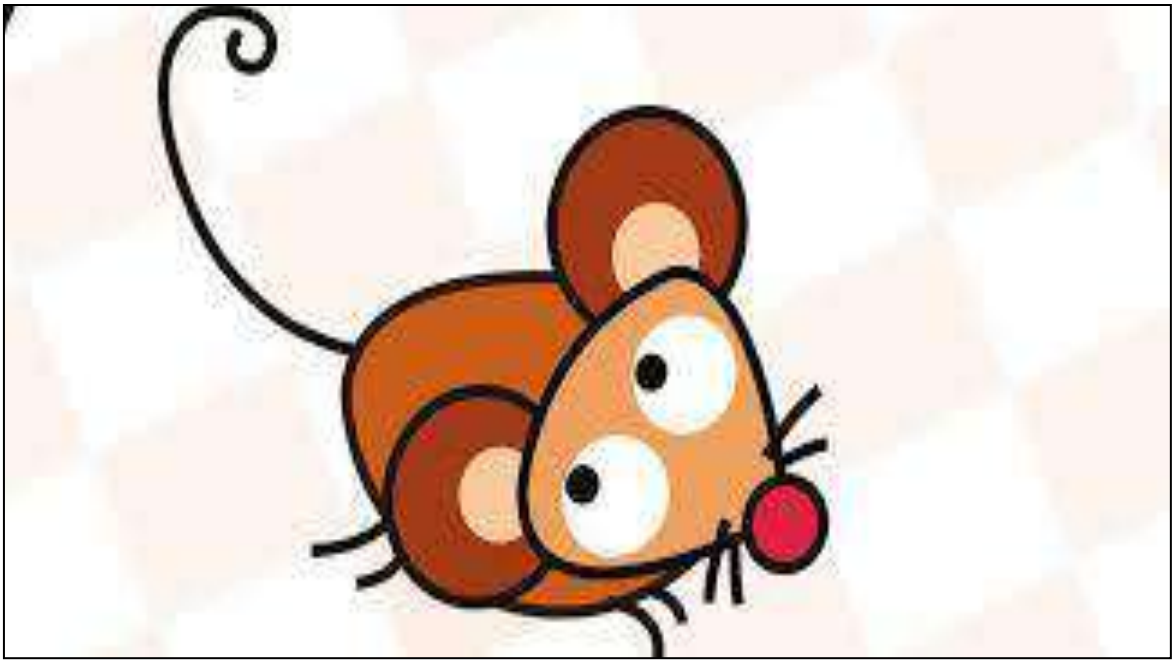

चूहे जी उधम मचाते क्यों,

कुतर-कुतर के खाते क्यों ।

चीं-चीं, चूँ-चूँ गाते क्यों हो,

बिल्ली से घबराते क्यों हो।

तुमने किया बड़ा कबाड़ा,

सारा अन्न चौपट कर डाला।

बिलों में रहते हो छुपकर,

हिम्मत है तो आओ निकलकर।

तुमको सबक सिखाएँगे,

कान पकड़कर नचाएँगे।

<u>छत्तीसगढ़ी जनउला</u>

संकलनकर्ता - सुनीला फ्रेंकलिन

1) बीच तरिया में टेड़गी रूख।

【 चिंगरी 】

2) फाँदे के बेर एक ठन, ढीले के बेर दू ठन।

【 दतवन 】

3) ठुड़गा रूख म बुड़गा नाचे।

【 टंगिया 】

4) कारी गाय कलिन्दर खाय, दुहते जाय पनहाते जाय।

【 कुँआ 】

5) अँउर न मँउर, बिन फोकला के चउँर।

【 मउहा 】

6) नानचून टूरा, कूद-कूद के पार बाँधे।

【 सुई 】

7) तरिया पार में फट-फीट, तेकर गुदा बड़ मिठ।

【 नरियर 】

8) तरी बटलोही उपर डंडा, नइ जानही तेला परही डंडा।

【 जिमीकांदा 】

9) एकझन कहे संझातिस झन, दूसर कहे पहातिस झन।

【 दिन-रात 】

10) एकठन थारी में दु ठन अंडा, एक गरम एक ठंडा।

【 सुरुज चंदा 】

11) पूछी में पानी पियय, मूँड़ी ललीयाय।

【 दिया 】

12) जरकुल ददा, निरासा दाई, फूलमत बहिनी, फोदेला भाई।

【 कुम्हड़ा 】

13) करिया बईला बैठे हे, लाल बईला भागत हे।

【 आगी 】

14) दुरूग के डोकरी, पाछु डाहर मोटरी।

【 मेकरा 】

15) पीठ कुबरा पेट चिरहा, नई जानही तेकर चाल किरहा।

【 कौड़ी 】

16) छितका कुरिया में बाघ गुर्रावय।

【 जांता 】

17) हरियर भाजी, साग में न भात में, खाय बर सुवाद में।

【 पान 】

18) काँटे मा कटाय नहीं, भोंगे मा भोंगाय नहीं।

【 छाया 】

19) उपर पचरी नीचे पचरी, बीच में मोंगरी मछरी।

【 जीभ 】

20) पानी के तीर-तीर चर बोकरा, पानी अँटागे मर बोकरा।

【 दिया 】

21) तीन गोड़ के टेटका मेरेर-मेरेर नरियाय, पाछू डाहर खुँदे त आगू डाहर हड़बड़ाय।

【 ढेंकी 】

22) नानकुन टूरा, गोटानी असन पेट, कहाँ जाथस टूरा, रतनपुर देश।

【 नरियर 】

23) दिखे में लाल लाल, छिये में गूज-गूज, हा दाई चाबदिस दाई बड़ेेक जन बूबू।

【 मिर्चा 】

24) ओमनाथ के बारी म, सोमनाथ के काँटा, एक फूल फूले, त पचीस पेंड़ भाँटा।

【 भसकटैया 】

25) एक सींग के बोकरा मेरेर-मेरेर नरीयाय, मुहु डाहन चारा चरे, पाछु डाहन पघुराय।

【 जांता 】

26) सुलुँग सपेटा फुनगी में गाँठ, नई जानही तेकर नाक लकाँट।

【 बाँस 】

27) फूल-फूले रिंगी-चिंगी, फर फरे लमडेरा

【 मुनगा 】

28) नानकुन मटुकदास,

ओहना पहिनय सौ पचास।

【 प्याज, गोंदली 】

29) आय लूलू जाय लूलू, पानी ल डर्राय लूलू।

【 जूता 】

30) पानी के भीतर काँस के लोटा

【 अंडा 】

31) तनक से फुदकी फुदकत जाय,

नौ से औड़वा पारत जाय।

【 सुई 】

32) अइठे गोइठे पार म बइठे।

【 पगड़ी 】

33) सुक्खा तरिया म कोकड़ा फड़फड़ाय।

【 लाई 】

34) बीच तरिया म, गोबर चोता।

【 कछुवा 】

35) फरय न फुलय सूपा सूपा टूटय।

【 राख 】

36) अरी अउ सरी, लुगरा कस धरि, पांजर म फूल फुलय, माथा म फरी।

【 जोंधरी 】

37) नांनकन लईका दु कौरा खाय बोडरी ल दबाबे त रस्ता दिखाय ।

【 टार्च 】

38) उचकी घोड़ा म पुचकि लगाम, उहूम बइठय ससुर दमांद।

【 बाल्टी, रस्सी अउ कुँवा 】

39) नाक बइठ के कान धर, मारय कोने शान ।

बइठे-बइठे जेन हा, करत रहय पहिचान ।

【 चश्मा 】

40) एक झन फकीर जेखर पेट म लकीर।

【 गेहु】

<u>जय नदी जय हिंद</u>

लेखिका - स्नेहलता "स्नेह"

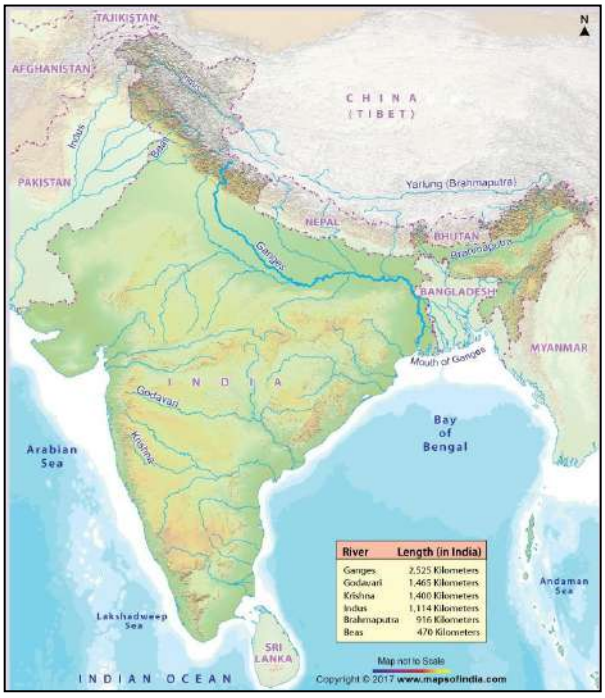

नदियों की है महिमा भारी

लगती धारा निर्मल प्यारी

कंचन जल कलकल है बहता

जीवन चलना हमसे कहता

गंगा यमुना पावन नदियाँ

सींचे धरती सदियाँ सदियाँ

शाम सबेरे पूजन होता

जलती मैया की है ज्योता

चढ़ता चाँदी, पैसा, सोना

और मिठाई भर भर दोना

जय गंगा नर्मदा कावेरी

युगों युगों से महिमा तेरी

<u>नदियाँ (सार छंद)</u>

लेखक - महेन्द्र देवांगन माटी

कलकल करती नदियाँ बहतीं, झरझर करते झरने ।

मिल जाती हैं सागर तट में, लिये लक्ष्य को अपने ।।

सबकी प्यास बुझाती नदियाँ, मीठे पानी देती ।

सेवा करती प्रेम भाव से, कभी नहीं कुछ लेती ।।

खेतों में वह पानी देती, फसलें खूब उगाते ।

उगती है भरपूर फसल तब, हर्षित सब हो जाते ।।

स्वच्छ रखो सब नदियाँ जल को, जीवन हमको देती ।

विश्व टिका है इसके दम पर, करते हैं सब खेती ।।

गंगा यमुना सरस्वती की, निर्मल है यह धारा ।

भारत माँ की चरणें धोती, यह पहचान हमारा ।।

विश्व गगन में अपना झंडा, हरदम हैं लहराते ।

माटी की सौंधी खुशबू को, सारे जग फैलाते ।।

शत शत वंदन इस माटी को, इस पर ही बलि जाऊँ ।

पावन इसके रज कण को मैं, माथे तिलक लगाऊँ ।।

<u>नन्ही जान</u>

लेखक - बी.आर. साहू

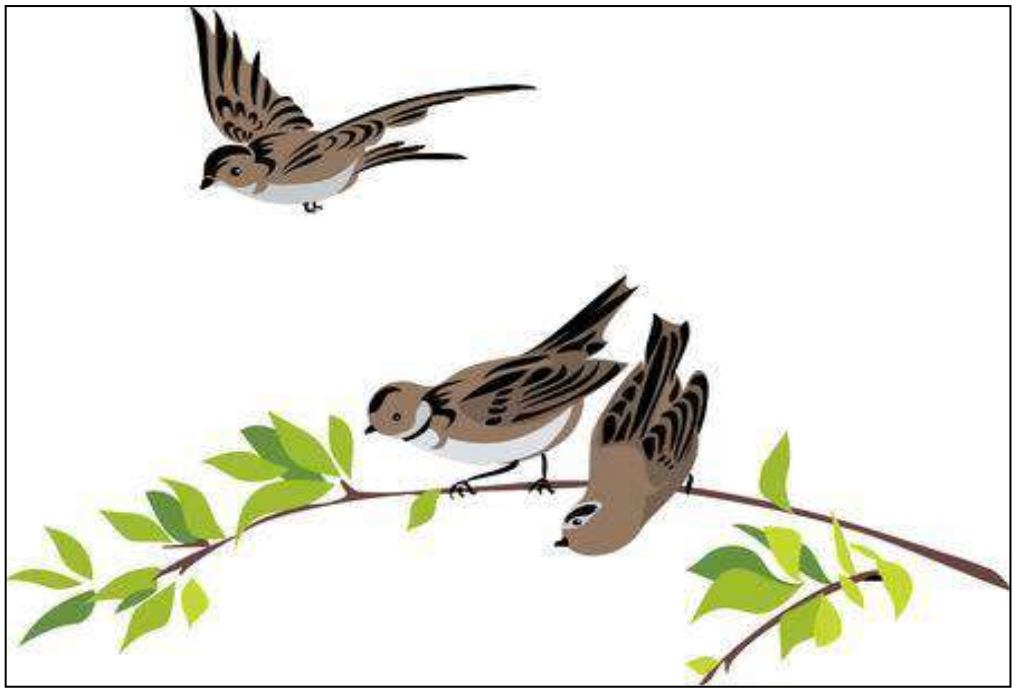

सीधी-सादी, भोली- भाली

कोमल-कोमल पंखों वाली।

फुदक-फुदक कर आ जाती है,

सबका मन बहलाने वाली।

वह कैसे चुप रह पाएगी,

चूँ-चूँ गीत सुनाने वाली।

मिहनत कर भोजन पाती है,

सुन्दर नीड़ बनाने वाली ।

गगन चूम कर आ जाती है,

नन्ही जान कहाने वाली।

कभी ख्वाब में खोई रहती,

सबको सबक सिखाने वाली।

पहेलियाँ

लेखक - व्यग्र पाण्डे

चलती हूँ मैं जमाना कहता
पर मैं चली ना अबतक देखो
टेड़ी मेड़ी कभी मैं सीधी
मंजिल पहुँचो तब तक देखो

उत्तर - सड़क

झुके तो भारी उठे तो हल्का
एक वस्तु के दो हैं पांव
गली गली और शहर शहर
जो मिलती है गाँव गाँव

उत्तर - तराजू

बिना सहारे लटक रहे हैं
बिन बिजली के चमक रहे हैं

उत्तर - तारे

पंख नहीं पर उड़ती हूँ मैं
नई-2मंजिल गढ़ती हूँ मैं
मैं रानी हूँ आसमान की
बिना बात के लड़ती हूँ मैं

उत्तर - पतंग

ना मैं लकड़ी फिर भी डण्डी
बिन पैर पहुँचाती मण्डी
मैं सड़क की हूँ महतारी
पर बेटी से अब मैं हारी
उत्तर - पगडंडी

घर की डॉक्टर
घर की रानी
बीच चौक में
लगे सुहानी
उत्तर - तुलसी

पैर चार पर पशु ना माना
जिसे चाहता सभी जमाना
देती दूध आजकल इतना
भैंस नहीं देती है उतना
उत्तर - कुर्सी

तन का सख्त मन का नरम
जिसके बिना ना होते शुभकरम
नाम इसका बताओ तुम
फोड़ फोड़कर खाओ तुम

उत्तर - नारियल

जिसमें पूरा संसार समाया
हर घर घर हर हाथ में आया
दुश्मन संग मित्र भी होता
किसने कैसे गले लगाया

उत्तर - मोबाइल

पढ़े लिखों का जो हथियार
थामोगे तो चलता यार
कदम कदम काम आता है
लगा के सीना करते प्यार

उत्तर - पैन

माँ

लेखिका एवं चित्र - प्रज्ञा सिंह

तेरा मेरा अटूट है बंधन,

तुझमें मैं हूँ मुझमें तू है

तूने मुझको जन्म दिया है,

स्नेह नीर से सिंचित करके

मुझपे ये उपकार किया है

तेरे निश्छल प्यार पे मैं माँ

हरदम अपना शीश झुकाऊँ

माँ मेरी है इक अभिलाषा

जन्मों तक तुझसे बंध जाऊँ

जन्मों तक तुझसे बंध जाऊँ!

माता ला परघाबो

लेखक - महेन्द्र देवांगन माटी

आवत हावय दुर्गा दाई, चलव आज परघाबो ।

नाचत गावत झूमत संगी, आसन मा बइठाबो ।।

लकलक लकलक रूप दिखत हे, बघवा चढ़ के आये ।

लाली चुनरी ओढे मइया, मुचुर मुचुर मुस्काये ।।

ढोल नँगाड़ा ताशा माँदर, सबझन आज बजाबो ।

आवत हावय दुर्गा दाई , चलव आज परघाबो ।।

नव दिन बर आये हे माता, सेवा गजब बजाबो ।

खुश होही माता हमरो बर, आशीष ओकर पाबो ।।

नव दिन मा नव रुप देखाही, श्रध्दा सुमन चढाबो ।

आवत हावय दुर्गा दाई, चलव आज परघाबो ।।

सुघ्घर चँऊक पुराके संगी, तोरन व्दार सजाबो।

ध्वजा नरियर पान सुपारी, वोला भेंट चढ़ाबो ।।

गलती झन होवय काँही अब, मिलके सबो मनाबो ।

आवत हावय दुर्गा दाई, चलव आज परघाबो ।।

मैगी

लेखक - प्रिया देवांगन "प्रियू"

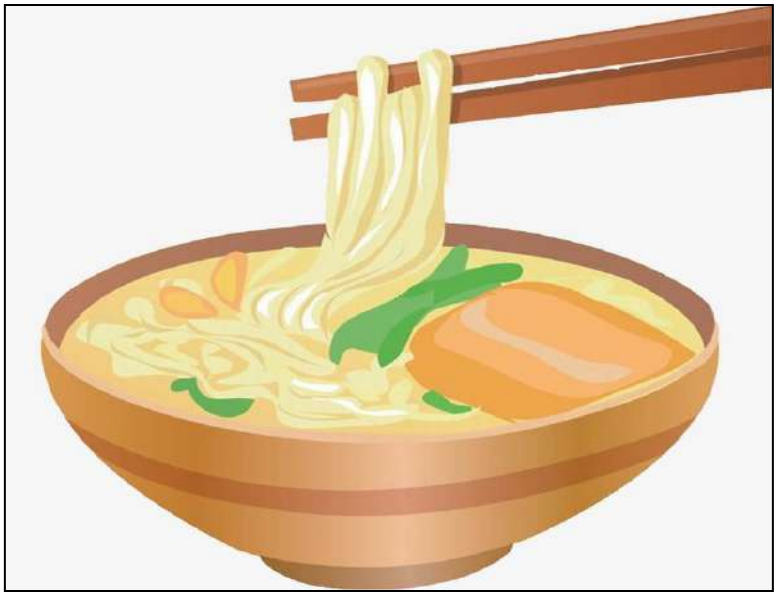

जब ले आहे मैगी संगी, कुछु नइ सुहावत हे।

भात बासी ला छोड़ के, मैगी ला सब खावत हे।।

दू मिनट की मैगी कहिके, उही ला बनावत हे।

माई पिल्ला सबो झन, मिल बाँट के खावत हे।।

सब लइका ला प्यारा हावय, एकरे गुन ल गावत हे ।

स्कूल हो चाहे पिकनिक हो, मैगी धर के जावत हे।।

लइका हो चाहे सियान, सबला मैगी सुहावत हे ।

कोनो कोती जावत हे, पहिली मैगी बनावत हे।।

कोनो आलू प्याज डार के, त कोनो सुक्खा बनावत हे।

कोनो सूप बनावत त, कोनो सादा खावत हे।।

फरा मुठिया के नइ हे जमाना, मैगी के जमाना हे।

दू मिनट की मैगी बनाके, माइ पिल्ला ल खाना हे।।

व्यथा वृक्ष की

लेखिका एवं चित्र - निहारिका झा

न काटो मुझको माँ हूँ मैं तेरी।

मुझसे ही तेरी हस्ती बनी है।

मेरे बिना तेरा जीवन ये कैसा?

वर्षा न होगी न भोजन मिलेगा।

मुझसे ही तुमको मिले प्राण वायु।

मेरे ही साये में हो दीर्घायु।

कटु घात मुझपे जब तुम करोगे ।

अपने ही संग सबका जीवन हरोगे।

इतनी सी माँ की विनती है तुमसे।

न काटो अपनी साँसों की डोरी।

न काटो अपनी साँसों की डोरी...।।

हरियर हरियर बगिया मोर

लेखिका - कु. सुहानी कैवत्य (कक्षा - 3)

हरियर हरियर बगिया मोर

फूल भरे हे मोर बगिया म

रंग बिरंगी फुलवारी ह

दिखत हे अब्बड़ सुघ्घर ग

हरियर हरियर दुबी ह

तितली भँवरा घुमय एमा

चारों मुड़ा उड़ावत हे धुर्रा

चिरई चहकय कोयल ह कुहकय

रकम रकम के फूल ह महकय

हरियर हरियर बगिया मोर

नवाचार - उत्सर्जन तंत्र का वर्किंग माडल

प्रस्तुतकर्ता - अनामिका पाण्डे

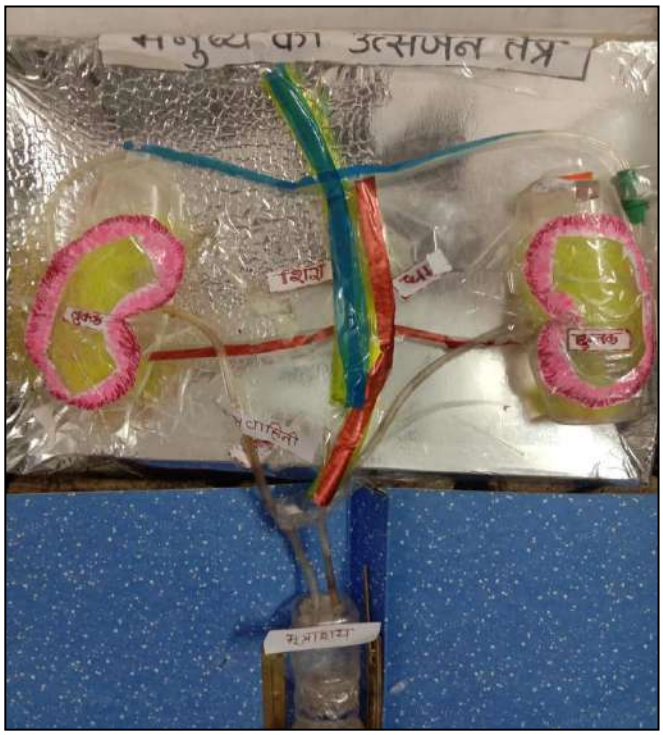

सामग्री एवं निर्माण विधि - दो शैम्पू की बाटल से किडनी बनायीं. एक छोटी सी बाटल से ब्लैडर बनाया. दो पतले पाइप किडनी मे होल करके फंसाया गया इसे मूत्र वाहिनी बनायी और दोनो पाइप को ब्लैडर मे होल कर फंसा दिये. ब्लैडर यानि छोटी बाटल का मुंह नीचे की तरफ रखा गया जिसमे ढक्कन लगता है. धमनी एवं शिरा के लिये मोटे पाइप को क्रमशः लाल एवं नीले रंग से रंगकर चित्रानुसार स्थित कर दिया. किडनी के अंदर छन्नक हेतु बेकार वाले बाडी स्क्रबर का उपयोग किया.

गतिविधि - शैम्पू की बाटल (किडनी) मे हल्का पीला पानी भर दिया. उसमे जब भी प्रेशर डालते हैं वह यूरेटर से होते हुए ब्लैडर मे भरता है और जब ढक्कन खोलते हैं तो मूत्र बाहर निकलता है.

<u>नवाचार - पोर्टफोलियो का निर्माण</u>

प्रस्तुतकर्ता - विभा सोनी

शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला, जांजी, विकास खण्ड - मस्तूरी, जिला – बिलासपुर, छत्तीसगढ़ में यह नवाचार किया गया है. बच्चों में सह संज्ञानात्मक गतिविधि के अन्तर्गत पोर्टफोलियो के बारे में बताया गया. इसमें बच्चों ने लिफाफे बनाकर सजाया. उसमें अनमोल वचन, कहानी, सूक्ति, श्लोक, विज्ञान के चित्र, वैज्ञानिकों की जीवनी, गणित के सूत्र, भारत का नक्शा, भारत का इतिहास, अंग्रेजी के टेंस, ग्रामर आदि बनाकर लिफाफे में रखा. इससे बच्चों में रचनात्मक कौशल का विकास हुआ. बच्चों ने अपने विषयों के बारीकियों के बारे में जाना. साथ ही साथ विषयों के प्रति रूचि विकसित हुई व रोचकता का विकास हुआ.

वर्ग पहेली

रचनाकार - दीपक कंवर

1 भ		2 आ			3 प	र			4 रं
		5 ठे					6 स	र	
जी					री				रे
		न्ह		7 नु		8 पं		9 को	
10 गो	स		नि						
		या				वा		म	11 ति
र					12 क		हा		र
ध		13 गु		14 ना				15 बि	
16 न	क				17 ध	र		हा	
		18 सी		नि					

बाएं से दाएं - 1. भालू 3. पलास, टेसू 5. धीरे 6. स्वर्ग 9. बाड़ी 10. मालकिन 12. कमर 14. लता, बेल 15. अमरूद 16. बेशरम, बदनाम 17. रखने का पात्र 18. बुजुर्ग महिला

ऊपर से नीचे - 1. भाभी 2. जन्माष्टमी 3. मशरूम की एक किस्म का नाम 4. रंगीन मिजाज़ 7. नमक 8. छत्तीसगढ़ी लोककला 9. कौसम 10. बच्चों के एक खेल का नाम 11. तेल निकालने की परंपरागत मशीन 12. कमर मे पहनने का जेवर 13. हथौड़ा 15. शादी

उत्तर

1 भ	लु	2 आ			3 प	र	सा		4 रं
उ		5 ठे	ल्हा		ते		6 स	र	ग
जी		क			री				रे
		न्ह		7 नु		8 पं		9 को	ला
10 गो	स	इ	नि	न		ड		स	
व		या				वा		म	11 ति
र					12 क	नी	हा		र
ध		13 गु		14 ना	र			15 बि	ही
16 न	क	टा			17 ध	र	न	हा	
		18 सी	या	नि	न			व	